भगतसिंह ने कहा

"सभी देशों को आजाद करवाने वाले वहां के विद्यार्थी और नौजवान ही हुआ करते हैं। क्या हिन्दुस्तान के नौजवान अलग-अलग रहकर अपना और देश का अस्तित्व बचा पायेंगे? नौजवान 1919 में विद्यार्थियों पर किये गये अत्याचार भूल नहीं सकते। वे पढ़ें। जरूर पढ़ें। साथ ही पॉलिटिक्स का भी ज्ञान हासिल करें और जब जरूरत हो तो मैदान में कूद पड़ें और अपने जीवन इसी काम में लगा दें। अपने प्राणों का इसी में उत्सर्ग कर दें। वरन् बचने का कोई उपाय नजर नहीं आता।"

–भगतसिंह

('विद्यार्थी और राजनीति', जून, 1928 में 'किरती' पत्रिका में प्रकाशित लेख)

जो बोलते हो उसे सुनो भी

अध्यापक,
अकसर मत कहो कि तुम सही हो
छात्रों को उसे महसूस कर लेने दो
खुद-ब-खुद
सच को थोपो मत :
यह ठीक नहीं है सच के हक में
बोलते हो तो उसे सुनो भी।

○ बेर्टोल्ट ब्रेष्ट

यदि जनता की बात करोगे, तुम गद्दार कहाओगे
बम्ब सम्ब की छोड़ो, भाषण दिया तो पकड़े जाओगे
निकला है कानून नया, चुटकी बजते बंध जाओगे
न्याय, अदालत की मत पूछो, सीधे मुक्ति पाओगे।

– शंकर शैलेन्द्र, 1948

प्रेमचन्द जन्मदिवस (31 जुलाई) के अवसर पर

अब क्रान्ति में ही देश का उद्धार है, ऐसी क्रान्ति जो सर्वव्यापक हो, जो जीवन के मिथ्या आदर्शों का, झूठे सिद्धान्तों और परिपाटियों का अन्त कर दे। जो एक नये युग की प्रवर्तक हो, एक नयी सृष्टि खड़ी कर दे, जो मनुष्य को धन और धर्म के आधार पर टिकने वाले राज्य के पंजे से मुक्त कर दे।

('कर्मभूमि' के पात्र अमरकांत का संवाद)

भगतसिंह के जन्मदिवस (27 सितम्बर) के अवसर पर

भारतीय रिपब्लिक के नौजवानो, नहीं सिपाहियो, कतारबद्ध हो जाओ। आराम के साथ न खड़े रहो और न ही निरर्थक कदमताल किये जाओ। लम्बी दरिद्रता को, जो तुम्हें नाकारा कर रही है, सदा के लिए उतार फेंको। तुम्हारा बहुत ही नेक मिशन है। देश के हर कोने और हर दिशा में बिखर जाओ और भावी क्रान्ति के लिए, जिसका आना निश्चित है, लोगों को तैयार करो। फर्ज के बिगुल की आवाज सुनो। वैसे ही खाली जिन्दगी न गंवाओ। बढ़ो, तुम्हारी जिन्दगी का हर पल इस तरह के तरीके और तरतीब ढूंढ़ने में लगना चाहिए, कि कैसे अपनी पुरातन धरती की आंखों में ज्वाला जागे और एक लम्बी अंगड़ाई लेकर जागे। अंग्रेज साम्राज्य के खिलाफ नवयुवकों के उर्वर हृदयों में एक उकसाहट और नफरत भर दो, ऐसे बीज डालो जो कि उगें और बड़े वृक्ष बन

जायें क्योंकि इन बीजों को तुम अपने गर्म खून के जल से सींचोगे। तब एक भयानक भूचाल आयेगा, जो बड़े धमाके से गलत चीजों को नष्ट कर देगा और साम्राज्यवाद के महल को कुचलकर धूल में मिला देगा और यह तबाही महान होगी।

तब, और सिर्फ तभी, एक भारतीय कौम जागेगी, जो अपने गुणों और शान से इन्सानियत को हैरान कर देगी। तब चालाक और बलवान सदा से कमजोर लोगों से हैरान रह जायेंगे। तभी व्यक्तिगत मुक्ति भी सुरक्षित होगी और मेहनतकश की सरदारी और प्रभुसत्ता को सत्कारा जायेगा। हम ऐसी ही क्रान्ति के आने का संदेश दे रहे हैं। क्रान्ति अमर रहे!

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के घोषणापत्र से

''उन किताबों से प्यार करो जो ज्ञान का स्रोत हों, क्योंकि सिर्फ ज्ञान ही वन्दनीय होता है; ज्ञान ही तुम्हें आत्मिक रूप से मजबूत, ईमानदार और बुद्धिमान, मनुष्य से सच्चा प्रेम करने लायक, मानवीय श्रम के प्रति आदरभाव सिखाने वाला और मनुष्य के अथक एवं कठोर परिश्रम से बनी भव्य कृतियों को सराहने लायक बना सकता है।''

— मक्सिम गोर्की